अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जनवरी-2024

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–नौवां	जनवरी–2024

4 **शब्द**

5 **नये साल की शुभकामनाएं**

9 **यादें**

25 **सतसंग- गुरु गुरु कर मन मोर**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 262 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

ऐहे ते देश पराया ओऐ सजणा

ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना, पाया ओऐ सजणा, x 2
ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,

1 आया जो ऐत्थे, सबने तुर जाणा,
रहना ना ऐत्थे, कोई राजा राणा, x 2
जिंदगी बिरछ दी, छाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना.....

2 कोई दिन ऐत्थे, रैण बसेरा,
झूठे सब नाते, कोई ना तेरा, x 2
सतगुरु ने, समझाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना.....

3 करके सिमरन, मन समझा लै,
भुल्लां गुरु तों, माफ करा लै, x 2
दाते दा नां क्यों, भुलाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना.....

4 पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़ लै,
भवसागर तों, 'अजायब' तूं तर लै, x 2
झूठा जगत, झूठी माया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना.....

सन्तबानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर (श्री गंगानगर) में सतसंग का कार्यक्रम

31 जनवरी से 4 फरवरी 2024

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

नये साल की शुभकामनाएं

सच्चे पातशाह हुजूर सावन–कृपाल के प्यारे बच्चों,

नये साल की खुशी के मौके पर मेरे महान सतगुरु के पवित्र नाम और उनकी सच्ची–सुच्ची याद में आप सबको मेरी तरफ से बहुत–बहुत शुभकामनाएं और बधाई। मैं चाहता हूँ कि नया साल आपके लिए खुशियों भरा हो और आप सदा प्रगति के पथ पर रहें।

प्यारेयो, सब ऋषियों–मुनियों और पीर–पैगम्बरों ने अपने समय के अनुसार अपनी–अपनी भाषा और शब्दों में हमें सावधान किया है कि पता नहीं मौत का बाज कब और कहाँ आकर हम पर झपट्टा मारे? मौत का बाज छोटा–बड़ा, स्त्री–पुरुष, अमीर–गरीब, गोरा–काला नहीं देखता। यह किसी का लिहाज नहीं करता, किसी से डरता नहीं किसी के साथ रियायत नहीं करता। यह वक्त का बड़ा पाबंद है, निश्चित समय पर आकर मुँह दिखाता है। यह रोते–धोते, चीखते–चिल्लाते हुए हमारी जान को कुर्क करके अपने साथ ले जाता है। गुरु बानी में आता है:

राणा राओ न को रहे, रंक न तुंग फकीर।
वारी आपो आपनी, कोऐ न बान्धे धीर।।

परमपिता कृपाल अपने सतसंगों में अक्सर मौत का जिक्र करते हुए उर्दू का यह शेर पढ़ा करते थे:

अगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं।।

हम जीव मौत को भूले बैठे हैं और आने वाली सदियों का सामान बना रहे हैं जबकि हम नहीं जानते कि अगला साँस आएगा या नहीं?

सच्चे पातशाह सावन कहा करते थे, ''यह आश्चर्यजनक बात है कि हम अपने रिश्तेदार, साथी–सम्बंधी, दोस्तों–मित्रों को अपने कंधे पर उठाकर श्मशान भूमि में अग्नि के हवाले कर आते हैं लेकिन हमारे इस मन ने कभी हमें यह महसूस नहीं होने दिया कि ऐसा दिन हम पर भी आएगा और हमें इस दुनिया के भरे बाजार को अचानक छोड़कर जाना पड़ेगा। यह मौका हमारे ध्यान में नहीं।'' गुरुबानी में आता है:

कहाँ सो भाई मीत है, देख नैन पसार।
इक चाले इक चालसी सब कोई अपनी वार।।

सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं, ''मौत के वक्त जान टूटती है और हड्डियां कड़–कड़ करती हैं।''

जिन्द निमाणी कढिए हड्डां कू कडक़ाए।

कबीर साहब अपनी बानी में हमें समझाते हैं:

तन ते प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार।
आध घड़ी कोऊ न राखत, घर ते देत निकार।।

घर की नार बहुत हित जास्यो, सदा रहत संग लागी।
जब ऐह हंस तजी यह काया, प्रेत– प्रेत कर भागी।।

सन्तों की बानी बड़ी साफ होती है, यह वहम और भ्रम नहीं रहने देती। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''प्यारेयो, यह मत समझें कि मौत पंडित से तिथि–वार पूछकर आएगी या महूर्त निकलवाकर आएगी कि कौन सा समय अच्छा है? आप यह न समझें कि मौत गरीबों को ही आती है राजा–महाराजाओं का लिहाज करती है। मौत का डंक सबके लिए एक बराबर है।''

प्यारे बच्चो, मैं आपको खुशी और उत्साह के साथ नये साल की शुभकामनाएं देता हूँ। साथ ही आपको ज्यादा जोरदार शब्दों में अपनी दिली भावना और प्यार के साथ यह भी कहना चाहता हूँ कि आप

लोग समझदारी से काम लें, मोह–माया और अज्ञानता की गहरी नींद से उठें, सच्चाई को समझें। मौत को सच और जीने को झूठ जानकर उस धन को इकट्ठा करें जो अंत समय आपके काम आए और इस संसार से जाते वक्त हमारी सहायता करे।

सब सन्तों ने इस मनुष्य जामें की बड़ी उपमा बताई है क्योंकि इस देह मे रहते हुए ही हम परमात्मा से मिल सकते हैं बाकी योनियों को यह रियायत नहीं है। कबीर साहब कहते हैं:

जिस देही को सिमरे देव, सो देही भज हर की सेव।
भजो गोबिंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।।

प्यारे बच्चो, मैं आपको यह सब कुछ सदा ही सतसंग में बताता रहा हूँ लेकिन आज इसलिए जोरदार शब्दों में दोहरा रहा हूँ ताकि आप इसे समझें और इस पर अमल करना शुरू कर दें।

प्यारेयो, मेरे दिल के जज़्बे को समझें मेरे दिल की भावना की कद्र करें, मेरे लफ्जों को अपने जीवन का अंग बनाएं। अपना ज्यादा से ज्यादा समय अभ्यास में लगाएं ताकि मुझे आराम मिले। मेरे महान गुरु ने मुझे जो ड्यूटी दी है उस ड्यूटी को निभाने में आप मेरी मदद करें। आप भी उन दोनों महान हस्तियों की खुशी और दया प्राप्त करें।

प्यारेयो, यह समय फिर नहीं आएगा। आप मेरे दिल से निकली हुई पुकार और विनती को सुनें। मेरी बात को समझें और आज से ही मजबूत होकर भजन–सिमरन में लग जाएं।

अगर हमारी कमाई नेक होगी, जीवन साफ सुथरा होगा गुरु पर भरोसा होगा तो अभ्यास बड़ी जल्दी रंग लाएगा। आओ, आज से ही हल्ला बोलें, गुरु के दरबार की तरफ आगे बढ़ें। गुरु की खुशी प्राप्त करें और अपना लोक–परलोक सुहेला करें।

***

गुरमेल सिंह नौरिया जी द्वारा बाबा जी के साथ बिताए हुए अनमोल पल

यादें

06 जुलाई 2023 | 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

प्यारे बाबा जी,

हमारे महान गुरु परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के चरणों में करोड़ों नमन और उनकी प्यारी संगत के चरणों में भी नमन। हम अपने महान गुरु के शुक्रगुजार हैं जिनकी अपार दया से हम उनके चरणों में बैठ रहे हैं और उनकी याद मना रहे हैं।

आज बाबा जी को दुनियावी तौर पर इस संसार से गए हुए छब्बीस साल हो गए हैं लेकिन उनकी दया हमेशा हर पल, साँस–साँस के साथ महसूस होती है। जो प्रेमी बाबा जी के साथ जुड़े हुए हैं, जिन्हें नामदान मिला हुआ है, जो सतसंग में आते हैं या बाबा जी से प्यार करते हैं उन सबके पास बाबा जी से जुड़ी हुई **यादें** हैं। उन सबके पास अपने अनुभव है और हर अनुभव खास है इसलिए आज भी हमें बाबा जी जैसा कोई नजर नहीं आता। हम लोग जिन्हें बाबा जी के साथ रहने का मौका मिला, जब हम उस समय को याद करते हैं तो यही कह सकते हैंः

बीते जो तेरे चरणां विच सोई भले दिहाड़े

हम सतसंगी जब आपस में मिलते हैं तो वे अनमोल पल अपने आप ही हमारी जुबान पर आ जाते हैं। आज एक ऐसा दिन है जब हम अपने प्यारे गुरु की याद में इकट्ठे हुए हैं और मुझे बाबा जी की प्यारी संगत से कुछ कहने का मौका मिला है। हमने बाबा जी को एक महान सन्त के साथ–साथ परिवार के एक अच्छे दोस्त, सलाहकार के रूप में भी देखा है, उनका हर रूप सराहने के काबिल है।

हमने जो वक्त बाबा जी के साथ गुजारा है उनकी बातें, उनकी हिदायतें और खासतौर पर उन्होंने जो विदेशी संगत के लिए कहा है, मैं आपको वह बताना चाहता हूँ।

मुझे बोलना तो कुछ खास नहीं आता, मैं ज्यादातर शब्द गाकर ही अपना आभार प्रकट करता हूँ लेकिन आज कुछ खास **यादें** आपके साथ शेयर करना चाहता हूँ। ऐसा करने में अगर कोई गलती हो तो कृपया मुझे क्षमा करें।

मेरे जन्म से पहले ही बाबा जी मेरी फैमिली को मिले थे। जब मेरा जन्म हुआ, मेरा नाम बाबा जी ने ही रखा था। मैं जब छोटा था, बाबा जी मेरे पिता जी के घर आया करते थे और सब लोग शब्द गाते थे, मैं भी शब्द गाता था जिसमें मेरा फेवरेट शब्द थाः

जे तू न औंदा रामा प्रहलाद डोल जांदा।

जब बाबा जी खूनी चक छोड़कर यहां आए, उस समय मैं बहुत छोटा था। मुझे वह समय याद है जब गुफा बनी थी। बाबा जी हमें बहुत प्यार दिया करते थे। फिर बाबा जी 77 आर.बी. चले गए, वहां जब भी मासिक सतसंग होता था। मैं वहां बहुत शौक से जाया करता था। बाबा जी की दया से उन सतसंगों में जाकर मुझे सेवा करने का मौका मिलता था। सन 1980 के दौरान जब बाबा जी 16 पी.एस. आश्रम आए तब यहां कंन्सट्रक्शन का काम चलता था। मुझे टैक्टर चलाने का बहुत शौक था जिस वजह से मुझे सेवा करने का काफी मौका मिला। वह वक्त भी बहुत दया भरा था जो मुझे उनकी संगत में बिताने का मौका मिला।

मैं बचपन से ही जब बाबा जी को देखता था तो बाबा जी बहुत खास लगते थे, प्यारे लगते थे। 1976 में जब बाबा जी यहां आए तो कैंट बिकनल के साथ दो प्रेमी और थे। उस समय बाबा जी के साथ एक छाते के नीचे एक बच्चे की फोटो है जोकि मेरी है। मैं उस समय ग्यारह साल के आस–पास का था।

मुझे वह पल भी याद है क्योंकि बाबा जी के साथ एक खास अटरेक्शन थी, वे दिखने में बहुत प्यारे लगते थे। मुझे वह समय भी याद है जब महाराज कृपाल, बाबा जी से मिलने 16 पी.एस. आए थे। मुझे उनकी कार के दर्शन करने का मौका मिला, वह **याद** खास है क्योंकि उस समय आस–पास कारें नहीं हुआ करती थी।

बाबा जी ने हमेशा बहुत प्यार से सारी चीजें समझाई। 1982 में मेरे एग्जाम के बाद मैंने किसी डॉक्टर के पास जाकर इंजेक्शन वगैरह लगाने की ट्रेनिंग ली जिससे मुझे बाबा जी की सेवा का मौका मिला। इसी दौरान बाबा जी ने मुझसे पूछा, ''मैं आपको ले लूं?'' हाँलाकि मुझे इसका मतलब पता नहीं था लेकिन मैंने कहा, ''हाँ जी, आप मुझे ले लीजिए।'' मैं पूरा दिन सोचता रहा कि इसका क्या मतलब है? मैं बहुत खुश था कि बाबा जी मुझे ले लेंगे। बाबा जी ने मुझे बताया कि मैं तेरी शादी बलवन्त के साथ करूंगा। उसके बाद शादी हुई और बाबा जी ने मुझे बताया कि अब आप मेरे साथ आश्रम में ही रहेंगे।

इस तरह जिंदगी ने करवट ली हाँलाकि हम दोनों की उम्र बहुत ज्यादा नहीं थी लेकिन बाबा जी ने दया करके हमें अपने चरणों में लगा लिया। उसके बाद दुनियावी काम जैसे खेती–बाड़ी, पशुओं को संभालना ये सब काम बाबा जी ने मुझे सिखाए। बाबा जी की पर्सनल सेवा के लिए भी मैं अपनी पत्नी बलवन्त के साथ बाबा जी के चरणों में था।

उस वक्त बहुत सेवादार नहीं थे लेकिन आज मैं हैरान भी होता हूँ और खुश भी होता हूँ कि बाबा जी ने दया करके मुझे वे सब काम सिखाए जो काम मैंने पहले कभी नहीं किए थे। मैं पिता जी के घर में कोई काम नहीं करता था। यहां आकर पशुओं को संभालना, आश्रम में झाड़ू लगाना, लालटेन जलाना, दूध को संभालना कि दूध को गरम

करके उसमें से किस तरह मक्खन निकालते हैं। किस तरह सब्जी–रोटी बनती है, लंगर की हर चीज कैसे बनती है यह सब मुझे बाबा जी ने सिखाया और उसके बाद धीरे–धीरे मुझे खेती करना भी सिखाया।

मुझे ट्रैक्टर, जीप, कार चलाने का शौक पहले से ही था। सब चीजों की किस तरह संभाल करते हैं, औजारों को किस तरह साफ रखते हैं। बाबा जी ने छोटी से छोटी चीज समझाई। मुझे पता ही नहीं चला कि बाबा जी ने ये सब मुझे कैसे सिखा दिया। हर चीज में उस समय भी बाबा जी की दया दिखती थी, आज भी वही दया महसूस होती है।

एक बार का एक वाक्या याद आता है कि बाबा जी ने मुझे कोई चीज पकड़ाई। मैं आज भी दिन में उस कमरे के सामने बहुत बार जाता हूँ, सेवादारों को वह पल बताता हूं कि यहां बाबा जी ने मुझे एक चीज पकड़ाई थी, मैंने दरवाजा खोलकर उस चीज को फैंक दिया। मैं जब

मुड़ा तो बाबा जी बिल्कुल मेरे सामने खड़े थे। बाबा जी ने मुझसे कहा, ''बेटा, यह काम तो मैं भी कर सकता था, मैं दिन में तुझे ऐसी कितनी ही चीजें पकड़ाऊंगा और तुम फैंकते रहोगे तो ये चीजें खराब हो जाएंगी फिर सेवादार भी डिसिप्लिन नहीं सीखेंगे, वे आपकी नकल करेंगे तो सामान खराब होगा जिससे हमारा नुकसान भी होगा।''

इस तरह बाबा जी ने बहुत सी चीजों को संभालने की आदत डाली। आज भी जब सेवादारों से बात होती है तो मैं उन्हें बताता हूं कि यह वह जगह है जहां बाबा जी ने खड़े होकर मुझे जिम्मेदारी सिखाई थी। सेवा करते हुए कई बार बाबा जी बुलाया करते थे और समझाते थे कि किस तरह से सब कुछ मैनेज करना है, किस तरह से सेवादारों से सहयोग लेना है ताकि कम समय में सेवा का काम खत्म हो जाए। इस तरह बाबा जी ने बहुत सारी बातें बारीकी से समझाई।

इसी तरह बाबा जी ने मुझे ड्राईविंग के बारे में समझाया। लगभग 1985-86 में बाबा जी मुझे पहली बार दिल्ली लेकर गए थे, उसके बाद जब तक बाबा जी देह रूप में रहे मुझे बाबा जी की गाड़ी ड्राईव करने का मौका मिला। बाबा जी ने मुझे कभी डांटा नहीं था बस, इतना ही समझाया बेटा, ''गाड़ी उतनी स्पीड में चलाओ जितनी कंट्रोल कर सकते हो।'' आज भी जब हम घर से निकलते हुए कार में बैठते हैं तो बाबा जी की यह बात ध्यान में रहती है और जो मेरे साथ में होते हैं मैं उन्हें भी यह बात जरूर बताया करता हूँ।

ऐसा कोई पल नहीं जिसमें बाबा जी की कोई सीख याद न आए। हर जगह बाबा जी का उदाहरण कि उन्होंने यहां पर यह कहा था, वहां वह कहा था। सच कहें तो आश्रम के हर कोने के साथ, सफर के हर रास्ते के साथ बाबा जी की मधुर **यादें** जुड़ी हुई हैं जिन्होंने हमारे जीवन की नींव रखी और आज भी हम वही कर पा रहे हैं। जिस समय बाबा जी ने ये बातें सिखानी शुरु की उस समय मैं सब सेवादारों से छोटा था लेकिन बाबा जी ने दया करके फिर भी मुझे वह सब सिखाया।

बाबा जी समय के बहुत पाबंद थे। वे कहा करते थे, ''अगर सुबह कहीं जाना है तो हमें रात को ही प्लेनिंग का पता होना चाहिए कि कितने बजे जाना है और कितने बजे वापिस आना है।'' बाबा जी जाते हुए यह जरूर पूछते थे कि कितने बजे वापिस आएगा। अक्सर उस समय छत पर टहलकर इंतजार किया करते थे इसलिए जाना और टाइम से आना आदत बन गई है जो आज भी कायम है। बाबा जी सतसंग के लिए दूर या लोकल कहीं भी गए, हमेशा टाईम से पहुंचे। वे हमेशा कहा करते थे, ''मैं कोई लीडर नहीं हूं कि लोग मेरी इंतजार करें। यह मेरे गुरु की संगत है, मैं अपने गुरु की संगत से इंतजार नहीं करवा सकता, मैं हमेशा टाईम से पहले पहुंचना चाहता हूँ।''

बाबा जी के साथ सफर में एक बार ऐसा हुआ कि रोहतक के प्रोग्राम में पांच मिनट लेट हो गए थे क्योंकि गाड़ी का टायर फट गया था। मैंने जिंदगी में पहली बार और आखिरी बार बाबा जी को सतसंग में बैठते हुए यह कहते हुए सुना कि मैं संगत से माफी मांगता हूँ कि मैं पाँच मिनट लेट पहुंचा हूँ। इसके बाद कभी ऐसा नहीं हुआ कि बाबा जी लेट हुए हों।

यह भी एक सीख है कि किस तरह से अगर आप वक्त की कद्र करते हैं, अपने गुरु की सीख को याद रखते हैं तो गुरु की दया प्राप्त करते हैं। जिस तरह से बाबा जी देह स्वरूप में दया करते थे उसी तरह हम आज भी उनकी दया प्राप्त कर रहे हैं।

एक तरफ बाबा जी बहुत प्यार करते थे, दूसरी तरफ उन्होंने जो सेवा का काम दिया था, उसे लेकर भी वे बहुत सख्त थे। हम उस काम को लेट नहीं कर सकते थे और उसे हल्के में भी नहीं ले सकते थे। उन्होंने कहा कि जो काम एक बार बोल दिया, वह दोबारा न बोलना पड़े। यह बात आज भी याद रहती है कि संगत की सेवा का कोई भी फर्ज जो बाबा जी ने बताया है, उसे करते हुए यही महसूस होता है कि यह बाबा जी की दी हुई सेवा है कि बाबा जी ने जो एक बार बोल दिया उसे उसी तरह निभा सकें।

बाबा जी प्रेमियों के पत्रों का जवाब दिलवाया करते थे। एक बार ऐसा हुआ कि किसी काम की वजह से मैं वे पत्र नहीं लिख सका, बाबा जी ने शाम को मुझसे पूछा कि वे पत्र हो गए? मैंने कहा, ''नहीं जी, आज काम बहुत था।'' बाबा जी ने कहा, ''तेरा काम तू जाने, मुझे वे पत्र लिखकर अभी वापिस दो।'' उसके बाद जिंदगी में कभी ऐसा नहीं हुआ। बाबा जी ने कहा कि ये पत्र प्रेमियों की जिंदगी हैं। उनकी जिंदगी इन पत्रों के सहारे चलती है, आप इन पत्रों को लेट नहीं कर सकते।

और भी दुनियावी बातें थी कि वे प्यार भी करते थे और सख्त भी थे। जिस तरह आर्मी मैन के प्रिंसिपल होते हैं उसी तरह बाबा जी के भी प्रिंसिपल थे, आप उन्हें इधर–उधर नहीं कर सकते लेकिन बाबा जी के साथ का एक अलग ही मजा था। आज भी हमारी कोशिश होती है कि हम उन प्रिंसिपल पर चलें जैसे कि आश्रम की सफाई कैसे रखनी है, सामान कैसे रखना है, संगत में डिसिप्लिन कैसे मेंटेन करना है। हम आज भी बाबा जी के बताए अनुसार करने की पूरी कोशिश करते हैं, संगत से उसी तरह प्यार करना चाहते हैं जैसे बाबा जी चाहते थे।

बाबा जी ने हमेशा कहा है कि मुझे गुरु की संगत अपनी देह से भी ज्यादा प्यारी है इसलिए संगत का निरादर सोच भी नहीं सकते। दूसरी तरफ जो डिसिप्लिन के रूल हैं, उनके साथ भी कम्प्रोमाइज नहीं कर सकते। मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी होती है कि संगत इस बात को

बहुत प्यार से समझती है। संगत जब भी आश्रम आती है तो डिसिप्लिन मेंटेन करती है। बाबा जी सिर्फ देह रूप में दिखाई नहीं देते बाकी कोई कमी नहीं है। संगत का डिसिप्लिन देखकर तो कभी–कभी ऐसा लगता है कि बाबा जी अपने रूम में बैठे हैं।

मुझे बाबा जी को बहुत सारे जोक्स सुनाने का भी मौका मिला है और मैंने बाबा जी के साथ मजाक वाले बहुत पल भी बिताए हैं। उन्होंने मुझे पर्सनल लाइफ में भी बहुत सारी चीजें सिखाई कि किस तरह से खाना खाते हैं, किस तरह से ड्रेसअप होते हैं, किस तरह पगड़ी बाँधते हैं। मुझे यह सब कुछ बाबा जी ने ही सिखाया है।

आश्रम में आने के बाद बाबा जी ने मेरा रूप बदला, हाँलाकि कुछ प्रॉब्लम के चलते हुए मैं ज्यादा देर तक पगड़ी नहीं बांध सकता लेकिन मैं जब भी पगड़ी बांधता हूं तो उस समय खुद को 'ऑन ड्यूटी' महसूस करता हूँ। दूसरी बात बाबा जी ने हमें काम सिखाया और हमारे ऊपर विश्वास भी किया। काम करते हुए हमसे गलतियां भी हुई हैं लेकिन

उन्होंने कहा, ''कोई बात नहीं काम करते हैं तो गलती भी हो जाती है।'' अगली बार यह काम कैसे करेंगे, यह भी सिखाया।

चाहे आश्रम में खेती–बाड़ी का काम हो, चाहे कंस्ट्रक्शन या मेंटेनेंस का काम हो बाबा जी के आईडिया बहुत प्रैक्टिकल और आसान हुआ करते थे। बाबा जी को खेती का बहुत शौक था। जब हम खेती करते थे तो जितना मौसम और सेहत इजाजत देती थी, बाबा जी उतना समय खेत में ही होते थे। वे खुद खड़े होकर हमें खेती के बारे में बताया करते थे, आज भी जब हम खेती करते हैं तो आँखों के सामने वह याद आती है कि बाबा जी यहां खड़े हैं, बाबा जी वहां खड़े हैं, बाबा जी ऐसा कहा करते थे, बाबा जी वैसा कहा करते थे। बाबा जी आज भी हर जगह चलते–फिरते महसूस होते हैं।

बाबा जी हम दोनों के साथ–साथ सुखपाल और सुखवीर से बहुत प्यार करते थे, बच्चों की वजह से बहुत बार मेरी खिंचाई भी होती थी। बाबा जी के सामने मेरी शिकायतें भी लगती थी, बाबा जी बच्चों को बहुत सपोर्ट भी करते थे। बच्चों की वजह से हमारी लाईफ में बहुत चेंज आया। जब सुखपाल पैदा होने वाली थी उससे पहले आश्रम में लाईट नहीं थी, पूरा आश्रम कच्चा था। बाबा जी ने आश्रम को पक्का करवाना शुरु किया। पहले जरनेटर आया फिर लाईट आई और बाकी चीजें डवलप हुई।

बाबा जी हमेशा कहा करते थे कि यह बच्चों की किस्मत से हुआ है जबकि करने वाले वे खुद ही थे, उनकी दया की बदौलत ही सब कुछ हुआ। जब बच्चे बाबा जी के रूम में जाकर शरारतें करते तो मुझे बहुत गुस्सा आता था। एक बार बाबा जी ने मुझे टोका अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं आपके साथ नहीं रहूंगा अगर आपको अच्छा नहीं लगता तो आप

नीचे चले जाएं। शुक्र है कि मैं उस समय नीचे नहीं गया। आज मैं कह सकता हूँ कि उस बात का मेरे ऊपर बहुत असर हुआ, मेरी कोशिश होती है कि मैं शान्त रहूं। मैं आज यह कह सकता हूँ कि बाबा जी की दया से मुझे काफी कम गुस्सा आता है। अब मुझमें ज्यादा पेशेंस है यह बात बोलने के बाद उन्होंने मुझे सब्र भी दिया।

बाबा जी के साथ गुजारी हुई जिंदगी उनकी दया की बदौलत ही है अगर उसे वर्णन करने की कोशिश करें तो ऐसे लफ्ज नहीं हैं कि जिससे बयान किया जा सके। हमारी लाईफ में कोई पल, कोई सीख, कोई देन हमारी अपनी नहीं है। हर चीज बाबा जी की बताई हुई है, बाबा जी की सिखाई हुई है। आज छब्बीस साल हो गए हैं लेकिन सच बताऊं तो आज भी वही प्यार, वही डर है। कभी ऐसा नहीं लगता कि बाबा जी आश्रम

की प्रॉपर्टी हमारे नाम कर गए हैं या यह जगह हमारी है। दिल से, रूह से यह बाबा जी की जगह है। बाबा जी ने हमें इस जगह को मेंटेन करने का मौका दिया है।

अगर मैं बाबा जी के प्रिंसिपल्स की बात करूं तो वह बच्चों के लिए हमेशा कहा करते थे कि बच्चों की पढ़ाई पूरी करवानी है। उन्होंने मुझे हमेशा कहा कि बच्चों की फीस कभी ड्यू नहीं होनी चाहिए। ऐसे हालात पैदा करो कि बच्चे पढ़ें। पढ़ाई ऐसी चीज है अगर बच्चे पढ़ जाएंगे तो जिंदगी बहुत अच्छी जिएंगे। बाबा जी ने हमेशा आपस में मिलकर चलने की बात कही है।

बाबा जी ने हर उस इंसान की सपोर्ट करने के लिए कहा है जो सतसंग के रास्ते पर चलना चाहता है। संगत के बारे में बाबा जी ने हमेशा कहा है कि हमारे गुरु ने हमें जो मौका दिया है हमें उसका शुक्राना करना चाहिए। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि देह रूप में गुरु नहीं हैं तो सब कुछ खत्म हो गया है। बाबा जी ने बहुत से सतसंगों में बताया है कि हमारे गुरु कहीं गए नहीं हैं उन्होंने सिर्फ अपनी देह को बदला है, उन्होंने हमारी ड्यूटी लगाई है कि अपने गुरु के कहे मुताबिक जिंदगी जिएं, अपनी नेक कमाई करके खानी है। आज बाबा जी की दया से हमारी बहुत अच्छी खेती है जिसमें हम अच्छे से संगत की सेवा कर सकते हैं।

विदेशी संगत के बारे में बाबा जी ने कहा है कि वे बहुत डिसिप्लिन में रहते हैं, तीसरे तिल पर ध्यान टिकाकर गुरु के दर्शन करते रहते हैं। वे फालतू की बात में अपना वक्त बर्बाद नहीं करते। वे टाईम के बहुत पक्के हैं। हर बात को बहुत गंभीरता से लेते हैं। आज भी जब संगत या सेवादारों से बात होती है तो हम उन बातों को जरूर याद करते हैं। बाबा जी अपनी जिंदगी में उन चीजों पर बहुत जोर दिया करते थे कि अपनी

नेक कमाई करके खाओ, जो वक्त है उसमें संगत की सेवा जरूर करो लेकिन संगत की सेवा हमेशा निस्वार्थ होनी चाहिए। बाबा जी ने हमेशा निन्दा को बहुत बुरा कहा है। उन्होंने कहा है कि निन्दा से अच्छा तो आप सो जाएं, आपके शरीर को आराम मिलेगा।

उन्होंने यह भी कहा है कि फालतू में किसी की बातों में दिलचस्पी नहीं रखनी चाहिए कि कोई क्या बात करता है बजाय इसके आप अपना काम करें। अपना और अपने बच्चों का ख्याल रखें। हमारी भजन–अभ्यास और संगत की सेवा की जो ड्यूटी लगी है, उसे करना चाहिए।

बाबा जी ने एक चीज और बताई है कि जब गुरु चोला छोड़ जाते हैं तो वहां कैसे हालात हो जाते हैं। बाबा जी की दया से आश्रम में ऐसे कोई हालात पैदा नहीं हुए। सारी संगत मिलकर अपने गुरु को याद करती है। संगत ज़ूम के प्रोग्राम से भी जुड़ी हुई है। विदेशी संगत भी हमारे लिए अजीज है। जैसा कि आप जानते हैं कि यह बॉर्डर एरिया होने के कारण यहां विदेशी संगत को आने की परमिशन नहीं है। जब भी बाबा जी हमें मौका देंगे, हमें बहुत खुशी होगी। हम विदेशी संगत का भी स्वागत करेंगे लेकिन आज के हालात में बहुत से प्रेमियों की इच्छा होने के बावजूद भी हम उन्हें बुला पाने में असमर्थ हैं।

मुझे विदेशी संगत को मना करते हुए अफसोस होता है लेकिन इस बात से तसल्ली मिलती है कि बाबा जी की संगत जहां भी जिस भी देश में है हमारी मजबूरी को समझती है। अपनी जगह पर जितना हो सके गुरु की याद मनाने की कोशिश करें।

संगत से विनती है कि वक्त के अनुसार अपने आपको ढालें। हमें पूर्ण गुरु परमात्मा रूप बाबा जी से नाम मिला है। यहां–वहां भटकने से अच्छा है, उनका दिया हुआ भजन–सिमरन करें। आपकी जगह के

आस–पास जहां आश्रम है, जहां संगत इकट्ठी होती है वहां मिलकर अपना भजन–अभ्यास करें। शुरु–शुरु में काफी संघर्ष करना पड़ा, बाबा जी की दया से संगत में प्यार है। बिना अनाउंसमेंट के सब अपना भजन–अभ्यास करते हैं, शब्द गाते हैं, सारी संगत की सेवा करते हैं।

इसी तरह से संगत से विनती है कि आप भी इन चीजों को मेंटेन करते हुए अपनी सेहत का ध्यान जरूर रखें। बाबा जी यह भी कहा करते थे कि अपनी सेहत का ध्यान रखते हुए भजन–अभ्यास करें। जब भी मौका मिले संगत में बैठें और अपने गुरु को याद करें।

पिछली बार भी मुझे रिर्टीट को अटेंड करने का मौका मिला। प्रेमी मिलकर इंतजाम करते हैं, बहुत खुशी होती है। बाबा जी ने हमेशा कहा है कि रोने–धोने या चीखने–चिल्लाने से अच्छा है कि भजन सिमरन के जरिए गुरु से विनती करें कि आप हमें देह रूप में दर्शन दें। देह रूप में गुरु का होना बहुत जरूरी है। इधर–उधर भटकने की बजाय गुरु के आगे विनती करें क्योंकि जो तरीका बाबा जी ने बताया है वह ज्यादा सार्थक है।

हमें पूरा विश्वास है जैसे बाबा जी हमारी फरियाद सुनते हैं, सुन रहे हैं, आगे भी सुनेंगे और जरूर हमें दर्शन देंगे। सिर्फ हमें और मेहनत करनी है। हममें ही कमियां हैं जिस कारण वे हमसे देह रूप में दूर हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हम उनके बताए रास्ते पर चलकर ज्यादा से ज्यादा विनती करें, अरदास करें ताकि वे जल्दी आकर हमें अपने दर्शन देने की कृपा करें।

बाबा जी की प्यारी संगत को बहुत–बहुत प्यार। जूम कार्यक्रम को ऑगेनाइस करने वालों का भी धन्यवाद है जिनकी मेहनत की बदौलत हम इस रिर्टीट का आनन्द ले पा रहे हैं। थैंक यू बाबा जी।

***

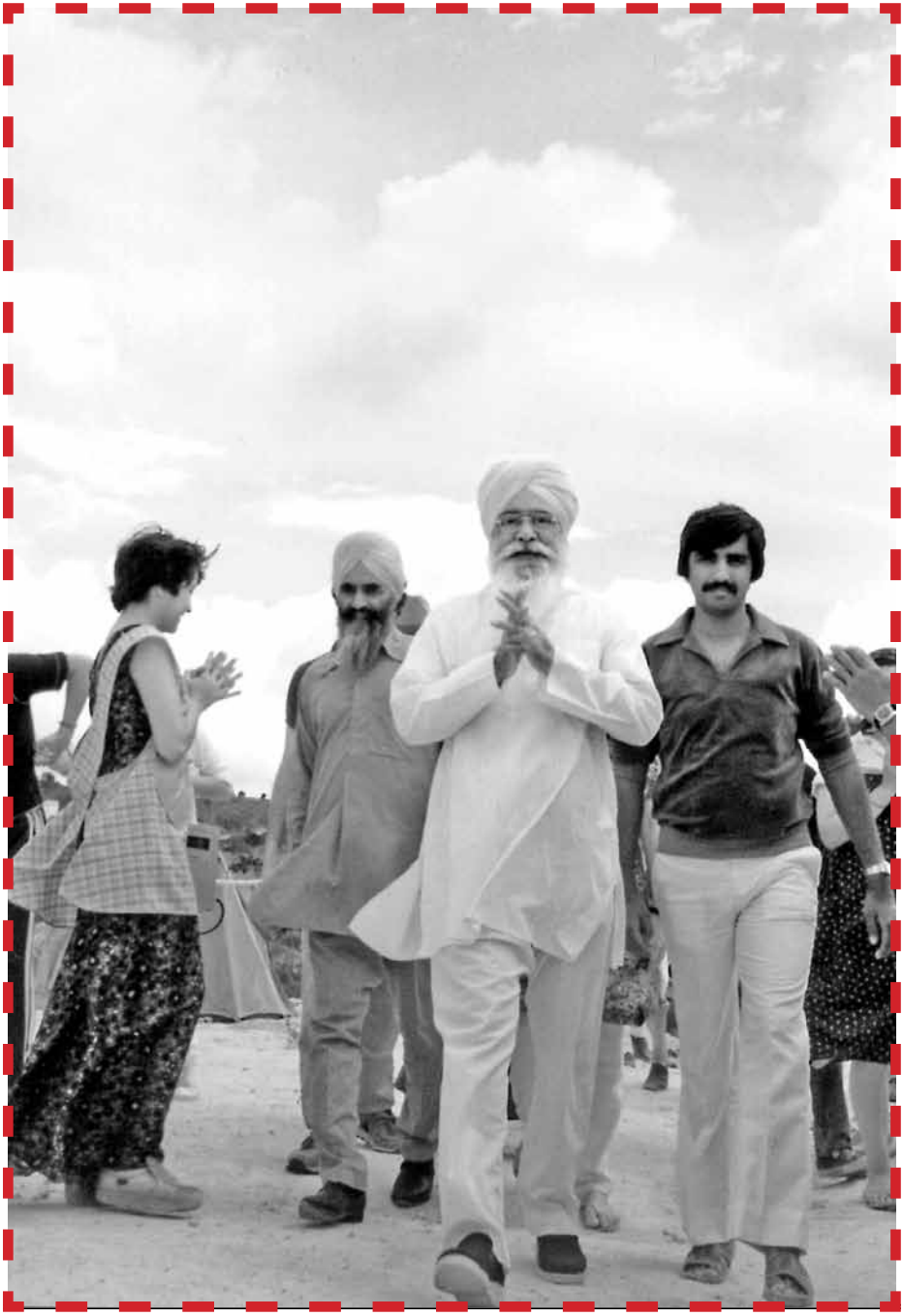

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

10 जून 1977 — गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु।।

गुरु साहब हमें इस छोटे से शब्द में बताते हैं कि हमारी पूजा के काबिल दो ही हस्तियाँ हैं, परमात्मा और सन्त। सन्त परमात्मा के अंदर समा गए हैं। परमात्मा ने खुद ही अपने मिलने का कुदरती साधन–तरीका रखा है कि मैं सन्त–महात्मा के ज़रिए ही आपको मिल सकता हूँ। परमात्मा जब जीवों को तारना चाहता है वह अपनी कला, अपनी ताकत, अपनी पावर किसी इंसान के अंदर रख देता है।

वक्त की तीन–चार चीज़ें काम आती हैं। वक्त का मास्टर बच्चे को पढ़ा सकता है, वक्त का पति औलाद पैदा कर सकता है वक्त का डॉक्टर हमें दवाई देकर तंदरुस्त कर सकता है। इसी तरह वक्त के सन्त ही हमें प्रभु के साथ, नाम के साथ जोड़ सकते हैं। कबीर साहब कहते है:

कबीर सेवा को दुइ भले एक सन्त एक राम।
राम जो दाता मुकति को सन्त जपावै नाम।।

दोनों ही हस्तियाँ सेवा और पूजा के लिए अच्छी हैं। भगवान मिल जाए तो वह ठीक है उन्हें भी पूज लें अगर सन्त मिल जाएं तो सन्तों ने भी नाम जपवाकर हमें भगवान में मिला देना है। गुरु साहब कहते हैं:

समुंद विरोल सरीर हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई।
गुर गोविंद गोविंद गुर है नानक भेद न भाई।।

जब हमने खोज की तो हमने दो चीज़ें उत्तम देखी। एक गुरु और दूसरा गोविन्द जिनमें कोई फर्क नहीं था। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, का के लागों पाए।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दीओ बताए।।

सेवक भजन कर रहा था, गुरु और गोविन्द दोनों ही आ गए। अब सेवक सोचने लगा कि ये दोनों इकट्ठे आ गए हैं, मैं किसके पैर पकड़ूँ? उसने सोचकर कहा कि मैं तो अपने गुरु के पैर पकड़ूँगा क्योंकि भगवान के होते हुए मैंने बहुत योनियों में जन्म लिया। भगवान मुझे अपने आप नहीं मिले, गुरु मिले तो उन्होंने मुझे भगवान से मिलवाया इसलिए मैं गुरु के पैर पकड़ता हूँ। सहजो बाई ने कहा है:

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ। गुरु के सम हरि कूंन निहारूँ।।
हरि ने जन्म दियो जग माहीं। गुरु ने आवागमन छुड़ाहीं।।
हरि ने पाँच चोर दिये साथा। गुरु ने लई छुटाय अनाथा।।
हरि ने कुटुंब जाल में गेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी।।

मैं राम को तज सकती हूं लेकिन गुरु को विसार नहीं सकती। हरि ने मुझे दुनिया में जन्म दिया लेकिन गुरु ने मेरा आवागमन जन्म–मरण का चक्कर खत्म कर दिया। हरि ने अपने आप को छुपाकर रखा लेकिन गुरु ने ज्ञान का दीपक देकर उस हरि को दिखाया। हरि ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार ये पांच चोर दिए लेकिन गुरु ने मुझे अनाथ समझकर बचा लिया। हरि ने कुटुंब के मोह में फंसा दिया लेकिन गुरु ने उस ममता की जंजीर से छुड़वा दिया।

सहजो बाई कहती हैं, ''अगर मैं सारे समुन्द्रों की स्याही बना लूँ, जितनी वनस्पति है, उन सबकी कलमें बना लूँ, सारी धरती का कागज़ बना लूँ, फिर भी गुरु की महिमा लिखना चाहूँ तो लिख नहीं सकती।''

सन्त–महात्मा हमें शब्द–नाम का भेद देते हैं, हमें तन–मन से शब्द–नाम की कमाई करनी चाहिए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमें इस तरह नहीं करना चाहिए कि दवाई लाकर अलमारी में रख

दें और डॉक्टर को बुरा–भला कहें।'' आप खुद सोचकर देख लें, जब हम दवाई नहीं खाएंगे और डॉक्टर के कहे मुताबिक परहेज नहीं रखेंगे तो किस तरह फायदा हो सकता है?

इंसान के अंदर जो पावर काम करती है, वह जन्म–मरण में नहीं आती। न शिष्य की देह, देह है और न गुरु की देह, देह है। शिष्य का स्वरुप सूरत है और गुरु का स्वरुप शब्द है। न हमारी आत्मा का विनाश होता है, न यह खत्म होती है, न मरती है और न शब्द ही जन्म–मरण में आता है। लोग कहते हैं कि गुरु मर गया, गुरु जहान छोड़ गया लेकिन सन्त कहते है कि आप मरने वाला गुरु क्यों धारण करते हो? गुरु कभी नहीं मरते। वे सदा ही दुनिया में रहते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा ना आवै न जाइ।
ओह अबिनासी पुरख है सभमह रहिआ समाइ।।

सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु।
सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु।।

सतगुरु हमें बताते हैं कि शब्द–नाम की कमाई करना सबसे बड़ी भक्ति है। आपको जो वक्त मिला है यह बहुत उत्तम है इस वक्त का फायदा उठाएँ। इंसानी जामा बार–बार नहीं मिलेगा इसमें भक्ति करें, मालिक से मिलें और आत्मा को अपने घर सच्चखंड ले जाएँ। गुरु का वचन परमात्मा का ही वचन है जो जीव के साथ जाएगा। वह अविनाशी होता है, यम को हमारे नज़दीक नहीं आने देता।

बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु।

गुरु साहब कहते हैं कि सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती, हमारे अंदर नाम जपने की विरह–तड़प पैदा नहीं होती अगर कोई ऊँचे से ऊँचा तीर्थ या धाम है तो वह सतसंग है। हज़ूर कहा करते थे, ''सौ

काम छोड़कर सतसंग में जाएं।'' आज तक जिसे भी ठोकर लगी है, सतसंग में जाकर ही लगी है। सतसंग के जरिए ही महात्मा हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह–तड़प पैदा कर देते हैं।

हज़ूर अक्सर कहा करते थे, ''सतसंग भजन की बाड़ है।'' हमारा मन लज़्ज़त का आशिक़ है। हम जैसी संगत करते हैं यह वैसा ही रंग पकड़ता है। अगर हम जुएबाज़ों की संगत करेंगे तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी, शराबी–कबाबियों की संगत करेंगे तो शराब पीने की आदत पड़ जाएगी। इसी तरह अगर हम नाम जपने वालों की संगत करेंगे तो हमारे अंदर भी नाम जपने का शौक पैदा हो जाएगा।

मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ।।
साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल।।

आप प्यार से समझाते हैं कि प्यारे भाइयो, आप नाम की कमाई करें, नाम के बगैर हमारा कोई संगी–साथी नहीं है। गुरु साहब कहते हैं:

नाम विसार चलह अन मारग अंत काल पछताही।

हम नाम को छोड़कर जिस भी रास्ते पर चलेंगे, हमें अंत समय पछताना पड़ेगा क्योंकि जब मौत आती है, जो धन–दौलत, जायदाद वगैरह हम यहाँ इकट्ठी कर रहे हैं, यह सब यहीं छोड़कर चले जाना है। यहाँ तक कि जिस शरीर में बैठकर हम इतना मान करते हैं कि हमारे जैसा कौन है? इंसान को इंसान नहीं समझते, यह शरीर भी एक पराया किराए का मकान है, इसे यहीं छोड़ जाना है।

आप प्यार से समझाते हैं कि जब परमात्मा हमारे ऊपर अति दया–मेहर करता है, हमें अपने साथ मिलाना चाहता है, तब हमारे दिल में साधु–संगत का प्यार बस जाता है। अगर वह मालिक दया न करे तो हमारे दिल में साध–संगत से प्यार तो दूर जो लोग साध–संगत करते

हैं, हम उनकी भी खिलाफत करना शुरू कर देते हैं, और साध–संगत में आकर हम फायदा नहीं उठा सकते। तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी पिछले पाप से हर कथा ना सहाये।
चाहे सोवे चाहे चले, चाहे दीये बात चलाये।।

जब हम पर पिछले पाप हावी हो जाते हैं तब हमें सतसंग अच्छा नहीं लगता। हम सतसंग में जाकर सो जाएंगे, बातें करेंगे या दिल में कोई न कोई ख्याल आ जाएगा कि यह काम करना है तो हम फौरन घर चले जाएंगे। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ।
माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ।।

पापी आदमी खुद तो क्या भक्ति करेगा, उसे भक्ति करने वाले भी अच्छे नहीं लगते। जिस तरह मक्खी सारा दिन गंदगी पर भिन भिनाती है लेकिन चन्दन या कपूर पर नहीं बैठती।

गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ।।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि गुरु इंसान नहीं होते वे समर्थ पुरुष होते हैं, भगवान के अंदर समाए हुए होते हैं। बहुत ऊँचे भाग्य वालों को ही उनके दर्शन होते हैं।

महाराज सावन सिंह जी आगरा की एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बार वहां प्लेग की महामारी फैल गई। एक पिता–पुत्र थे, जब पुत्र दम तोड़ने लगा तो पिता रोने लगा। पुत्र ने कहा, ''आप क्यों रो रहे हैं?'' पिता ने कहा, ''मैं इसलिए रो रहा हूँ, कि तू मेरा इकलौता पुत्र है, अब तू मरने लगा है।'' पुत्र ने कहा, ''पिताजी, मैं मरने नहीं, जीने लगा हूँ, मेरा पिछला जन्म कीकर के पेड़ का था। किसी ने मेरी दातुन स्वामी जी की सेवा में लगाई, मैं स्वामी जी की रसना पर चढ़ा। पिछले जन्म

में मैं पेड़ की योनि में था। अब मुझे अगला जन्म पूरे इंसान का मिलेगा, मैं स्वामी जी की दया से सच्चखंड जाऊंगा इसलिए आप रोएँ नहीं।''

हिन्दूस्तान में आम रिवाज़ है कि लोग गंगा में ही अस्थियाँ विसर्जित करते हैं। बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे कि मैं अपनी माता का वचन पूरा करने के लिए उनकी अस्थियाँ विसर्जित करने गंगा गया। वहां हमारा कोई पूर्वज पीपल का पेड़ बना हुआ था जिसका नाम 'घुदु' था। मेरे दिल में दया आई कि चलो यहां तक आए हैं तो इसका भी उद्धार कर देते हैं। मैंने उसका पत्ता तोड़कर मुँह में डाला और वह पीपल सूख गया फिर उसे इंसानी जामे में लाकर नामदान देकर तारा।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी अमृतसर में मजीठिया रोड पर कोठी बनवा रहे थे, वहां एक आम का पेड़ था। एक दिन बैठे–बैठे, कुदरती उनकी निगाह आम के पेड़ पर पड़ी और वे कहने लगे, ''इस आम के पेड़ को काट दो।'' जो लड़की उनका खाना तैयार करती थी, वह कहने लगी, ''सच्चे पातशाह, संगत इसके नीचे आराम करती है, आप इसे क्यों कटवा रहे हैं?''

महाराज जी ने कहा, ''यह सन्तों की नज़र में आ गया है, अब इसे इंसानी जामे में लाना है।'' वहां कपूरथला का एक प्रेमी ईशर सिंह था, उसकी कोई औलाद नहीं थी। उसने हाथ जोड़कर कहा, ''सच्चे पातशाह, जब इसे इंसानी जामे में ही लाना है, मेरी कोई औलाद नहीं है तो यह लड़का मेरे घर जन्म ले।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''अच्छा भाई, तू इसका नाम आम रख लेना।'' जब वह लड़का बनकर उसके घर पैदा हुआ तो वह उसे महाराज सावन के पास लेकर आया। तब महाराज जी ने खाना तैयार करने वाली लड़की लाजो से कहा, ''काको, देख यह आज अच्छा है या पहले पेड़ बना हुआ था तब अच्छा था?''

गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''गुरु सच्चखंड से मालिक के हुक्म में आते हैं, मालिक के हुक्म की पालना करते हैं। वे पवित्र, और निर्मल होते हैं।''

गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''गुरु करणहार हैं, गुरु कर्ता है गुरु भगवान है। गुरु जो चाहे सो कर सकता है लेकिन गुरु दुनिया में आकर कोई करामात नहीं दिखाते। आत्मा को परमात्मा में मिला देना ही उनकी बड़ी से बड़ी करामात है। हम जैसे जुएबाज, शराबी–कबाबियों को मालिक की भक्ति में लगा देना कोई छोटी–सी करामात नहीं होती।

गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''गुरु के अलावा कोई पूजा के काबिल नहीं होता, गुरु जिसे चाहें सच्चखंड ले जा सकते हैं। अगर सारी दुनिया भी तैयार हो जाए तो वे उन सबको सच्चखंड ले जा सकते हैं।''

सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु।

वे मालिक की तरफ से नाम के भंडारी बनकर आते हैं। मालिक उनसे यह नहीं पूछता कि तू इतने जीवों को क्यों लेकर आया है? ऐसे भंडारी बनने का क्या फायदा जो दुनिया को दात ही न दे? और ऐसे दाता बनने का भी क्या फायदा हो सकता है जिसके भंडार में कोई दात न हो? सतगुरु पूरे होते हैं, मालिक की तरफ से उन्हें बेशुमार भंडार मिला होता है और वे संसार में भंडारी बनकर आते हैं।

गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु।

गुरु साहब कहते हैं अगर कोई सच्चे से सच्चा तीर्थ है तो वह गुरु का दर्शन है अगर कोई कल्प वृक्ष है जिसके नीचे जाकर सारी

मनोकामनाएं पूरी होती हैं, वह हमारा गुरु ही है। कल्प वृक्ष आज तक किसी ने नहीं देखा लेकिन गुरु को हम देख सकते हैं और उनसे हम अपनी आशा–मंशा पूरी करवा सकते हैं।

गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु।।

गुरु साहब कहते हैं कि गुरु दाता बनकर आते हैं, नाम देते हैं। वे चाहें तो नाम के सहारे सारे संसार का उद्धार कर सकते हैं। नाम देना कोई मामूली बात नहीं यह बड़ी भारी जिम्मेदारी है।

बाबा जयमल सिंह जी के जीवन की एक घटना है कि वे एक बार एक प्रेमी मोतीराम टेलर के बुलाने पर अम्बाला में एक महीने के लिए सतसंग करने गए थे। वहां हुक्म सिंह एक अकाउंटेंट था, मोतीराम टेलर उसे नाम दिलवाना चाहता था। बाबाजी ने कहा, ''बेशक आप और दो सौ आदमियों को नामदान दिलवा लो लेकिन इसे नाम मत दिलवाओ।'' मोतीराम ने कहा, ''यह बड़ा आदमी है इसके आने से सतसंग की रौनक बढ़ जायेगी आप इसे ज़रूर नाम दें।''

बाबाजी ने कहा, ''मैं एक शर्त पर इसे नाम दूंगा, मुझे एक महीना यहाँ रहना था मगर मैं अभी ब्यास चला जाऊंगा।'' मोतीराम ने कहा कि आप इसे नाम दें, मैं ब्यास आकर सतसंग सुन लूँगा। बाबाजी ने कहा, ''अच्छा भाई, तांगा मँगवाओ।'' तांगा आते ही बाबा जी का बिस्तर उसमें रखा गया और बाबाजी हुक्मसिंह को नामदान देकर फ़ौरन गाड़ी पकड़कर अम्बाला से ब्यास के लिए चल दिए। रास्ते में लुधियाना में महाराज सावन सिंह जी मिले। महाराज सावन सिंह जी ने विनती की कि मेरा गांव महिमा सिंह वाला यहाँ से नजदीक ही है अगर आप वहां अपने चरण रखें तो अच्छी बात है। बाबाजी ने कहा, ''अभी मेरे पास वक्त नहीं, तू इस रविवार डेरे मत आना, एक रविवार छोड़कर फिर आना।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि हम जब भी छुट्टी पर आते तो सीधे बाबाजी के पास चले जाते थे। बाबाजी कहते थे कि आप घर का कोई कारोबार नहीं करते, घर का भी काम किया करो। महाराज सावन सिंह जी के दिल में यह ख़्याल आया कि शायद इसलिए बाबाजी ने मुझे मना किया है। वे उस रविवार ब्यास नहीं गए, चौदह–पंद्रह दिन बाद गए। जब ब्यास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि बाबा जयमल सिंह जी को बहुत तेज बुखार चढ़ा हुआ था कि नीचे की सांस नीचे और ऊपर की सांस ऊपर, उन्होंने चौदह दिन कोई दवा भी नहीं ली। बीबी रुक्को जो उनकी सेवा में रहती थी, वह बहुत रोने लगी। बाबाजी ने उससे कहा, ''काको, तू रो मत। मैं अभी नहीं जाऊंगा, अभी मेरा वक्त बाकी है।''

महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''यह क्या बात है, आपने मुझे आने क्यों नहीं दिया? मैं आकर आपकी सेवा करता।'' बाबाजी ने कहा, ''तू अभाव ले आता कि सन्तों की यह हालत?'' बाबाजी ने कहा, ''तुझे हज़म नहीं होगा।'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''मैं वायदा करता हूँ कि आप जब तक इस दुनिया में रहेंगे तब तक मैं किसी को यह बात नहीं बताऊंगा।''फिर उन्होंने सारा किस्सा सुनाया कि मोतीराम ने जिद्द करके हुक्म सिंह अकाउंटेंट को नाम दिलवाया। काल, हुक्मसिंह को गरम तवे पर जलाने वाला था। मैंने उसके कर्म अपनी देह पर लिए और चौदह दिन उसका भुगतान किया। नाम जिम्मेदारी है, नाम देना कोई खाला जी का वाड़ा नहीं है। नाम, दूसरों के कर्म उठाने होते हैं।

गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु।।
गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु।।

गुरु की महिमा अकथ है, कोई कथ नहीं सका। कोई उसकी महिमा बयान कर नहीं सका क्योंकि गुरु जो कुछ है सो है।

जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि।।

गुरु साहब कहते हैं, ''हमारी जितनी भी इच्छाएँ हैं गुरु पूरी करते हैं और नाम के साथ भी मिलाते हैं। गुरु सब वस्तुओं के मालिक हैं। किस मुँह से गुरु की महिमा करें? वे तो करन कारण हैं, समर्थ हैं, जो चाहे सो कर सकते हैं। वे पशु, प्रेत और पत्थरों को भी तारते हैं।''

पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि।।
सतिगुर सरणी आइआँ बाहुड़ि नही बिनासु।।

गुरु साहब कहते हैं, ''जिसने सतगुरु से नाम ले लिया उसका विनाश नहीं होता, काल की कोई ताकत नहीं कि वह उस नाम को खत्म कर सके। हम हमेशा के लिए परमात्मा से मिलकर अमर हो जाते हैं, परमात्मा ही हो जाते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

नानक गुर ते गुरु होया वेखो तिस की रजाइ।

देखो, उसकी कैसी रज़ा हुई, कैसी दया हुई उसने हमें भी अपना ही रूप बना लिया।

हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु।।

गुरु साहब आखिर में आकर हमें यही नसीहत देते हैं कि जब नाम मिल गया है तो हमारी ड्यूटी है कि फैले हुए ख्याल को सिमरन के ज़रिए आँखों के पीछे एकाग्र करें। सोते–जागते सतगुरु को अपने अंदर बसाएँ। हमें अपने सारे सांस–ग्रास उनके लेखे में लगा देने चाहिए क्योंकि यह मौका हमें बार–बार नहीं मिलेगा। गुरु साहब कहते हैं:

गुरू गुरू गुर कर मन मोर, गुरू बिना मै नाही होर।।

गुरु–गुरु करें। गुरु के बगैर हम जितना भी दुनिया को याद करेंगे यह सब काल की वगार है, बिना मजदूरी के किया जाने वाला काम है।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899